# मुर्दाबाद

असग़र वजाहत

# मुर्दाबाद

मिलिटरी की पुरानी गाड़ी। आगे तीन-चार आदमी मजे में बैठ सकते हैं और पीछे पंद्रह-बीस आदमी और 'लूट' का सामान तक आ सकता है। असहन खां डकैत ने मिलिटरी की नीलामी में खरीदी थी इलाहाबाद से। डकैती और फौजदारी जैसे कामों के लिए केकड़ा दूर-दूर तक मशहूर है। आजमाबाद वाली फौजदारी में और पीरनपुर वाले डाके में यही गाड़ी थी, जो पुलिस जीप को कई मील पीछे छोड़ गई थी। टॉप-गेयर में हवा से बात करती है, और इंजन इतना बे-आवाज की सोते आदमी के पास से निकल जाए तो करवट न ले।

आजकल केकड़ा अस्सी रुपये रोज में नूरू मियां के इलेक्शन में चल रहा है। रात में जब इलेक्शन दफ्तर के सामने आकर खड़ा होता है तो रोडवेज वाली जीपों की नानी मर जाती है। एक ही गाड़ी लाइट मारती है– केकड़ा और जैसा केकड़ा वैसा ही ड्राइवर। बच्चू खां भी अहसन खां डकैत के साथियों में था। अहसन खां ने बच्चू को गैंग में इसलिए रखा था कि दो-चार जिले में उसका जैसा ड्राइवर मिलना मुश्किल है। फतेहपुर, बांदा और हमीरपुर में बच्चू खां की ड्राइवरी का डंका बजता है। बांदा में किसी ट्रक को रोककर कहो कि बच्चू खां के आदमी हैं, फतेहपुर पहुंचा दो तो ड्राइवर इज्जत से बिठाएगा। चाय अलग पिलाएगा और फतेहपुर में छोड़ देगा।

आजकल तो बच्चू खां भी नूरू मियां के इलेक्शन में काम कर रहा है। मैला पाजामा और टेरीकॉट की गंदी कमीज पहने केकड़ा चलाता है। जेब में माउजर रिवाल्वर पड़ा रहता है। बच्चू खां ने माउजर से शादी कर ली है। पता नहीं कब साली जरूरत पड़ जाए। हंसता रहता है और पान की पीक से पीले दांत झलकते रहते हैं। लेकिन मौके पर बिजली हो जाता है।

केकड़ा के बोनट पर एक बड़ा-सा माइक फिट है और दोनों तरफ खिड़कियों से पार्टी के बड़े-बड़े झंडे बांध दिए गए हैं। जब गाड़ी टॉप गेयर में चलती है तो झंडे इर्द-गिर्द फरफराते हैं। बच्चू खां के साथ शाहिद मियां और जग्गू बैठते हैं। जग्गू शाहिद मियां का बॉडीगार्ड है। छाया की तरह पीछे-पीछे लगा रहता है। जब कोई काम नहीं होता तब कोठी के दलान में बैठा बीड़ी पिया करता है या खाना पकाने वाली छोकरी रसूलन को छेड़ता रहता है। जग्गू को नूरू मियां ने बचपन से पाला है। अब तो खा-पीकर अच्छा-भला पहलवान है।

''भाइयों और बहनों- आप अपना कीमती वोट हमारे उम्मीदवार नूरू मियां को देकर जिले की तरक्की में हाथ बंटाएं।'' स्पीकर शाहिद मियां के हाथ में है। हेल्लो-हेल्लो, ठक-ठक।

''हेल्लो-हेल्लो, महिलाओ... देवियो और सज्जनो! लोकसभा के उम्मीदवार श्री नूरूद्दीन अहमद को अपना वोट देकर हमारे हाथ मजबूत कीजिए...'' याद रखिए... यार मुख्तार, चौराहे से और लौडों को पीछे भर लो। नारे लगाने वालों की कमी हो गई है। और ये लो पांच रुपये। सालों को मूंगफली बांट देना, शाहिद मिंया ने खड़खड़ाता हुआ नोट बढ़ा दिया।

''भाइयो और बहनो...'' शाहिद मियां ने भाषण शुरू कर दिया। पीछे बैठे सब लोग उतरकर सिगरेट सुलगाने लगे ''जैसा कि आप सबको मालूम है, सिंडीकेट वाले बहुत परेशान कर रहे हैं। हम आप से दो-टूक बात ये कह रहे हैं कि एक बार हमें पांच साल का मौका दीजिए। फिर आप देखिएगा कि मुल्क की हालत में क्या चेंज आता है। सिर्फ एक मौका

दीजिए। यदि देश में समाजवाद न आया और जिसे केवल और सिर्फ हमारी पार्टी ही ला सकती है। तो देश बराबर हो जाएगा... ।''

''बस यार ज्यादा भाषण न करो। अपना ही एरिया है,'' हैदर ने शाहिद मियां के कंधे पर हाथ रखकर कहा, ''और फिर यहां कोई तुम्हारा भाषण क्या समझेगा। तुम तो कल रामलीला के मैदान में बोलना।''

''चुप रहो यार...तुम क्या जानो। बिल्कुल हथियार हो, अपने ही एरिया में काम न किया गया तो झांट वोट मिलेगा?'' मुख्तार बोला।

''मैं जब कोई बात कहता हूं तो तुम टांग अड़ा देते हो!'' ...हैदर हथियार का पारा हाई हो गया।

''चुतियापे की बात करो और कुछ कहा न जाए,'' मुख्तार ने फिर छेड़ा।

''ऐसी-तैसी में जाए साला इलेक्शन,'' हथियार घर की तरफ चल दिए।

शाहिद मियां ने बिगड़ती हुई स्थिति को संभाल लिया, ''तुम छोड़ो यार इन बातों को, लो सिगरेट पियो।''

हर पांच साल के बाद ही तो शहर की किस्मत जागती है। वैसे कच्ची सोई हुई सड़कों और दबी-दबी-सी छोटी-छोटी दूकानों के सामने खरहे कुत्ते घूमा करते हैं। घच-घच करते हुए इक्के सवारियों को स्टेशन से कचहरी और कचहरी से बस अड्डा ले जाते हैं। साइकिल की मरम्मत की दूकानों पर गांव से आए ग्राहकों को साइकिल वाले ठगते रहते हैं। हलवाइयों की दुकानों के सामने दूर तक दोनों ओर मक्खियों की भरमार रहती है। एक-आध सीधी शरीफ लड़की सिर पर पल्लू डाले निकल जाती है तो कन्हई पानवाला जोर से जांघ पर हाथ मारता है और मुस्कराकर नन्हें खां को देखकर आंख मार देता है। कई-कई महीने कोई नई खबर हलचल नहीं पैदा करती। बस सीधी-सादी बेकार व निकम्मी और छोटे-छोटे आपसी झगड़ों व मारपीट की जिंदगी। पुलिस चौकी के सिपाहियों के कैरेक्टर के चर्चे होते हैं। नन्हें खां कभी-कभी 'कव्वाली' कर लेते हैं। लेकिन आजकल तो शहर ही बदला हुआ है। चाय के होटल रात में ग्यारह बजे तक खुले रहते हैं। वहां लिखा है 'मेहरबानी फरमाकर सियासत पर गुफ्तगू न करें' लेकिन हर आने वाला सियासत पर गुफ्तगू करता है। 'वोट किसको देंगे? नूरू मियां को या पंडित ललित नारायण मिश्रा को? नूरू मियां अहीरन डाले हैं। उनको कोई हिंदू तो वोट न देगा। और मिश्रा जी गोश्त खाते हैं? उनको हिंदू वोट देंगे? अजी साहिब नूरू मियां ही थे जिन्होंने बरसात में घर गिर जाने वालों को रुपया दिलवाया था। तो क्या नूरू मियां ने अपनी गांठ से दिया था? मिश्रा जी ने तो अपने पैसे से अल्लीपुर वाली पुलिया बनवा दी थी। पंडितों का राज है, जो मिश्रा जी हो गए तो एक-आध कारखाना खुलवा देंगे। नूरू मियां क्या उखाड़ लेंगे? उन्हें तो पाकिस्तान चले जाना चाहिए। कैसा बगुला भगत आदमी है। पहले मुस्लिम लीगी था अब... ये सियासत ही गंदी चीज है मियां! जो साला आता है वही रंग जाता है। एक ही बात है, चाहे नूरू मियां को वोट दो या मिश्रा जी को। अमा इलेक्शन से कभी कुछ हुआ है? पिछले बीस साल से इलेक्शन ही तो लड़ा है। झांट भी तो नहीं उखड़ी। मिश्रा जी हां या नूरू मियां, सब साले एक ही थैली के चट्टे-